विद्या भवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

वर्ग दशम् विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

ता:-०९/०७/२०२० षष्ठ: पाठ: सुभाषितानि

•श्लोक

क्रोधो हि शत्रु प्रथमो नराणां ,

देहस्थितो देहविनाशनाय ।

यथास्थित: काष्ठगतो हि वह्नि:,

स एव वह्निर्दहते शरीरम्।।

•अन्वय:

नराणां देहविनाशनाय प्रथम: शत्रु: देहस्थित:क्रोध: (भवति)यथा काष्ठगत: स्थित: वह्नि: काष्ठम् एव दहते (तथैव शरीरस्य क्रोध:)शरीरं दहते ।

•शब्दार्था:

हि- निश्चय ही , देहविनाशनाय – देह के नाश के लिए

वह्नि:- अग्नि , प्रथम:- पहला

यथास्थित:- जैसे स्थित , दहते -जलाती है

देहस्थित: -देह में स्थित , काष्ठस्थित: -काठ में स्थित

शरीरं -शरीर को

•अर्थ

निश्चय ही मनुष्यों के शरीर में रहने वाला क्रोध शरीर को नष्ट करने के लिए (उनका) पहला शत्रु है। लकड़ी में स्थित आग उसे जलाने का कारण होती है, वही आग शरीर को भी जलाती है।